बाल्टी के अन्दर
समन्दर
कहानी: अवेहि-अबकस
एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो।

शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं। साथ ही एकलव्य तीन नियमित पत्रिकाएँ — चकमक, संदर्भ एवं स्रोत भी प्रकाशित करता है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: **एकलव्य,** ई-10, शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016

शिक्षा को अधिक प्रासंगिक व रोचक बनाने के उद्देश्य से **अवेहि-अबकस** परियोजना शिक्षकों और बच्चों के साथ काम करती है। परियोजना द्वारा संगति नामक सहायक शिक्षण सामग्री की शृंखला भी विकसित की गई है जिसका उपयोग वर्तमान में मुम्बई के नौ सौ से अधिक महानगर पालिका स्कूलों में किया जा रहा है। शिक्षक शिक्षा के लिए पूरक पाठ्यक्रम मंथन भी अवेहि-अबकस परियोजना द्वारा विकसित किया गया है। संस्था निष्पक्ष व न्यायसंगत समाज में शिक्षा के अधिकार को पुनः परिभाषित करने के लिए राष्ट्रीय अभियान का हिस्सा है।

बालटी के अन्दर समन्दर

कहानी: अवेहि-अबकस

चित्र: दीपा बलसावर ..... डिज़ाइन: प्रीति राजवाड़े

..... एकलव्य का प्रकाशन

एकलव्य

दीपा बलसावर लेखिका और चित्रकार हैं। वे पिछले 25 वर्षों से विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के साथ कार्य कर रही हैं।

प्रीति राजवाड़े ग्राफिक डिज़ाइनर हैं और बैंगलोर में रहकर काम करती हैं। एक नन्ही बच्ची की माँ होने के नाते, इन दिनों, बच्चों के लिए शैक्षिक सामग्री की डिज़ाइन की ओर उनका झुकाव बढ़ा है।

बालटी के अन्दर समन्दर
BALTI KE ANDAR SAMANDAR
कहानी: अवेहि-अबकस
चित्र: दीपा बलसावर
डिज़ाइन: प्रीति राजवाड़े
अँग्रेज़ी से अनुवाद: दीपाली शुक्ला

जुलाई 2013 / 3000 प्रतियाँ

© अवेहि-अबकस, मुम्बई www.avehi-abacus.org

कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 300 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट एवं नवजबाई रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-93-81300-69-5
मूल्य: ₹ 45.00

प्रकाशक: **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोन: (0755) 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया 100 gsm कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

2/9
यह सोनू है।
यह है सोनू की बालटी।

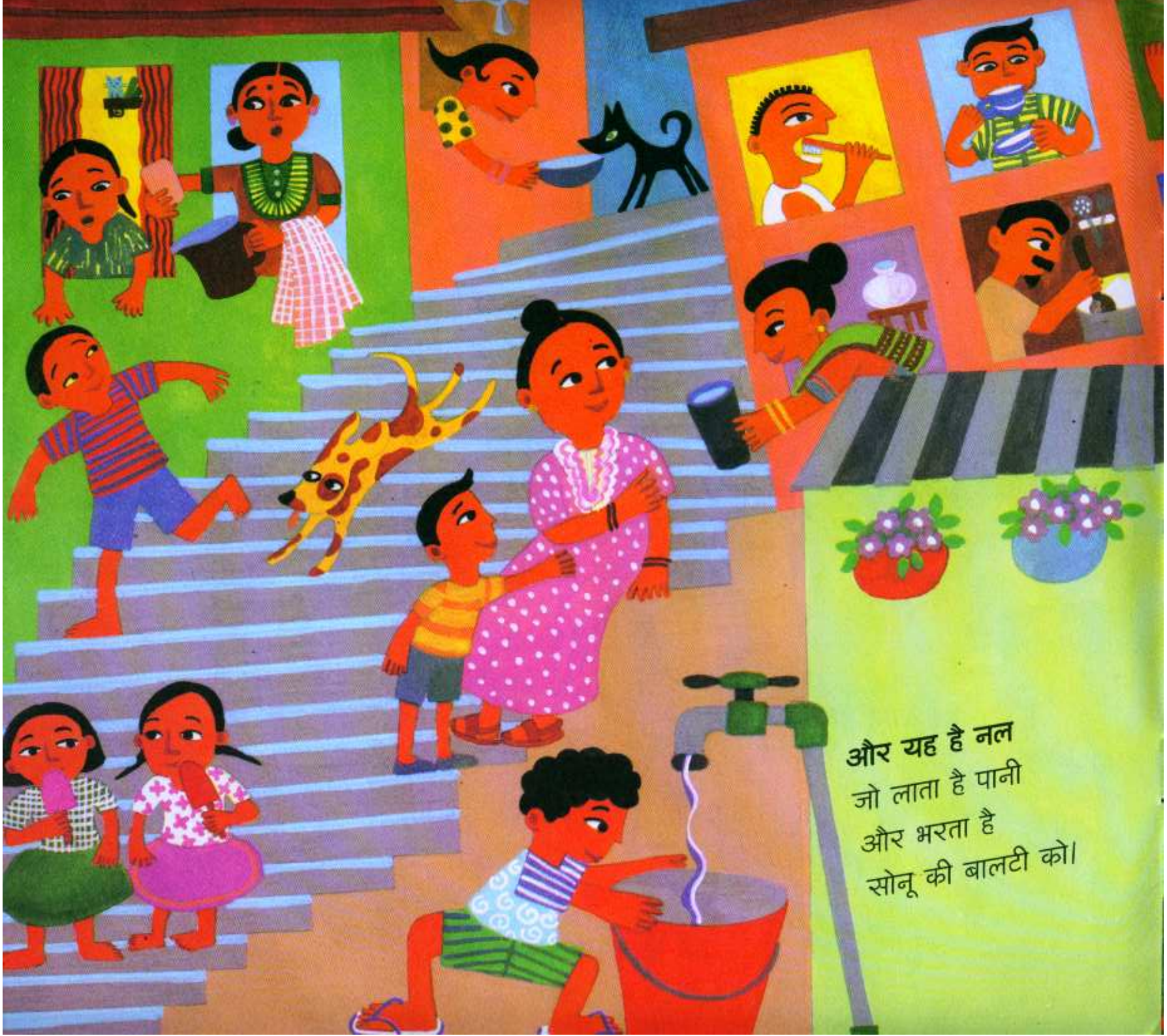

और यह है नल
जो लाता है पानी
और भरता है
सोनू की बालटी को।

यह है पाइप
जिसमें चलता है पानी
जो नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

यह है झील
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

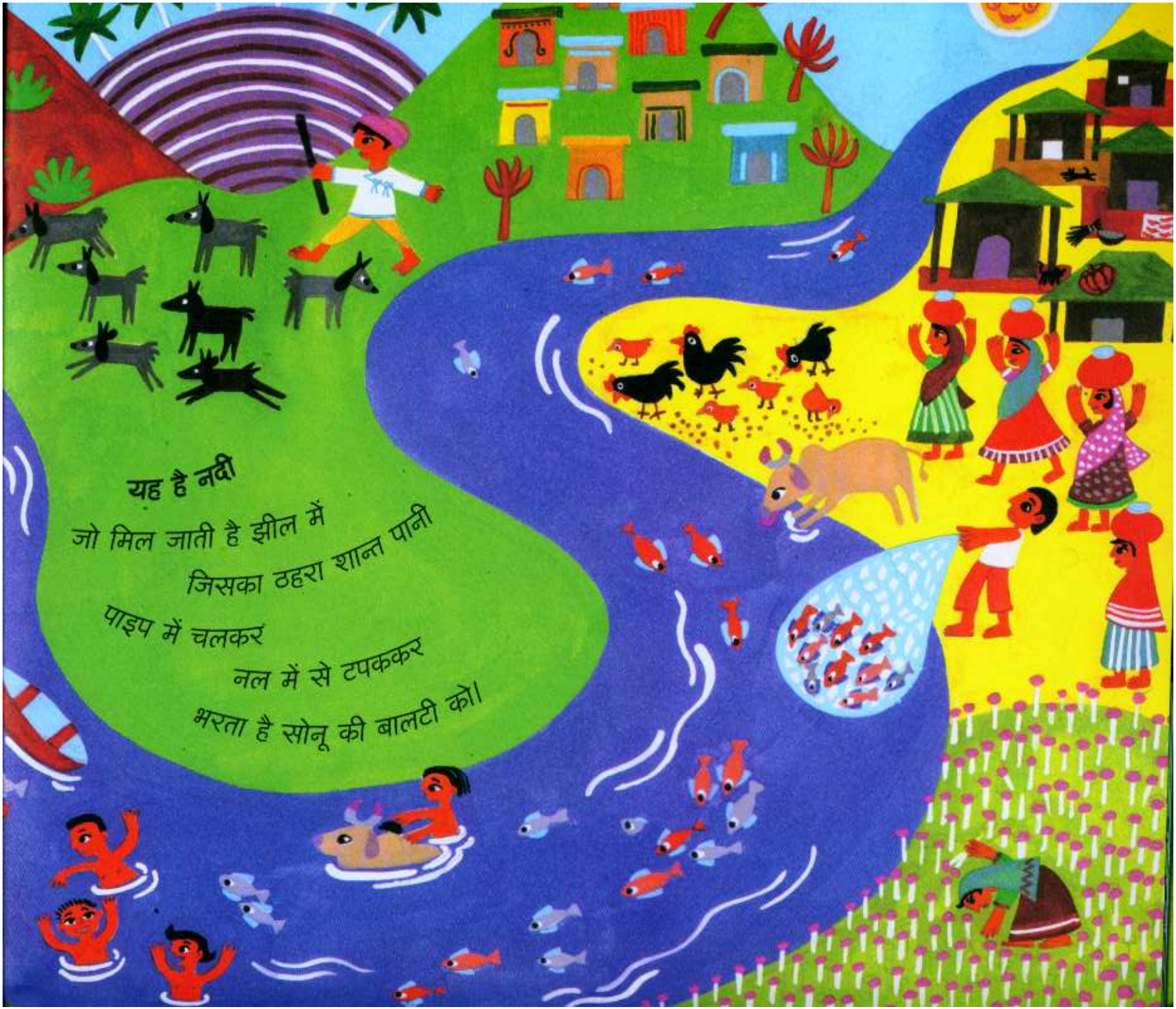
यह है नदी
जो मिल जाती है झील में
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

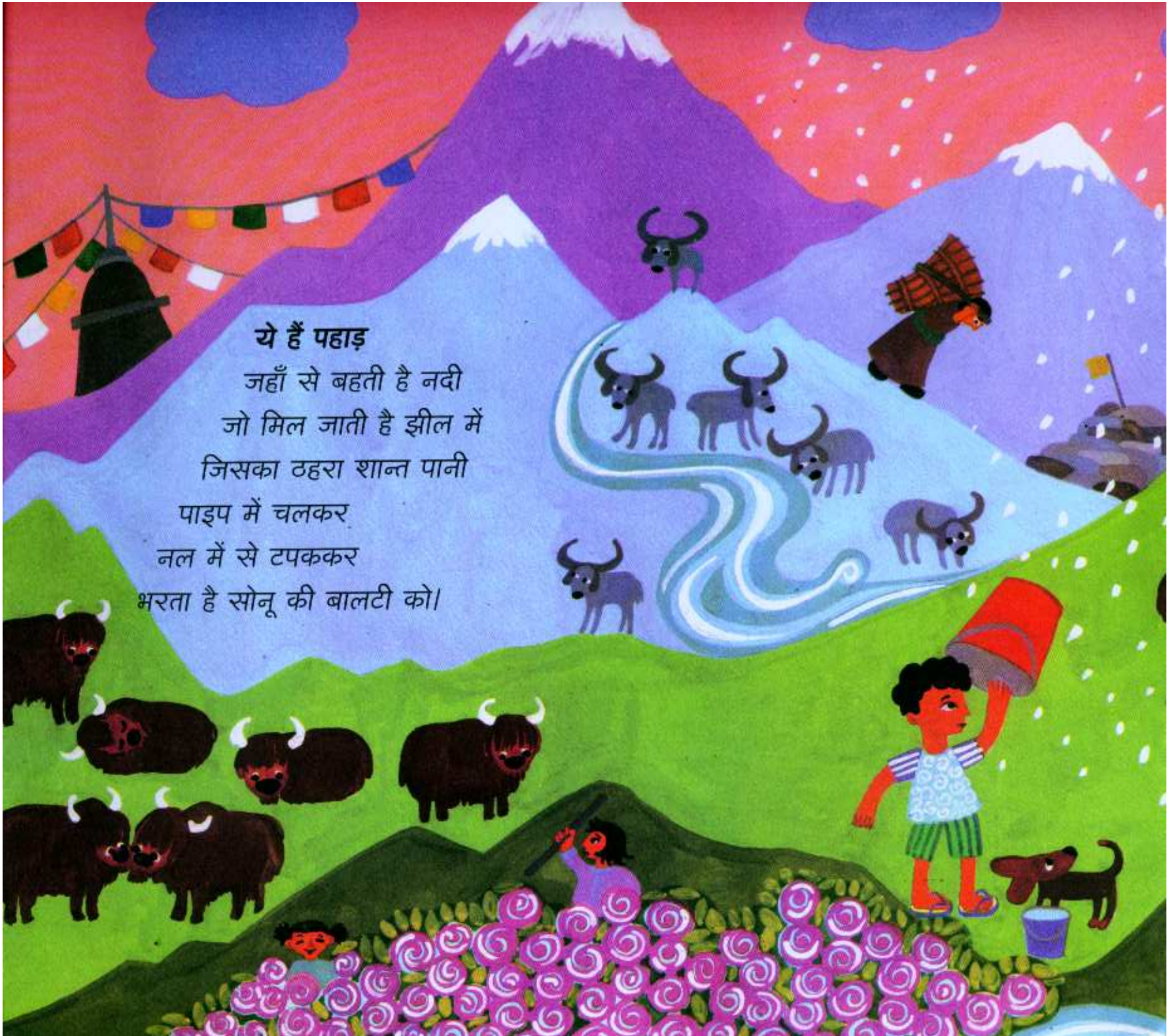
ये हैं पहाड़
जहाँ से बहती है नदी
जो मिल जाती है झील में
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

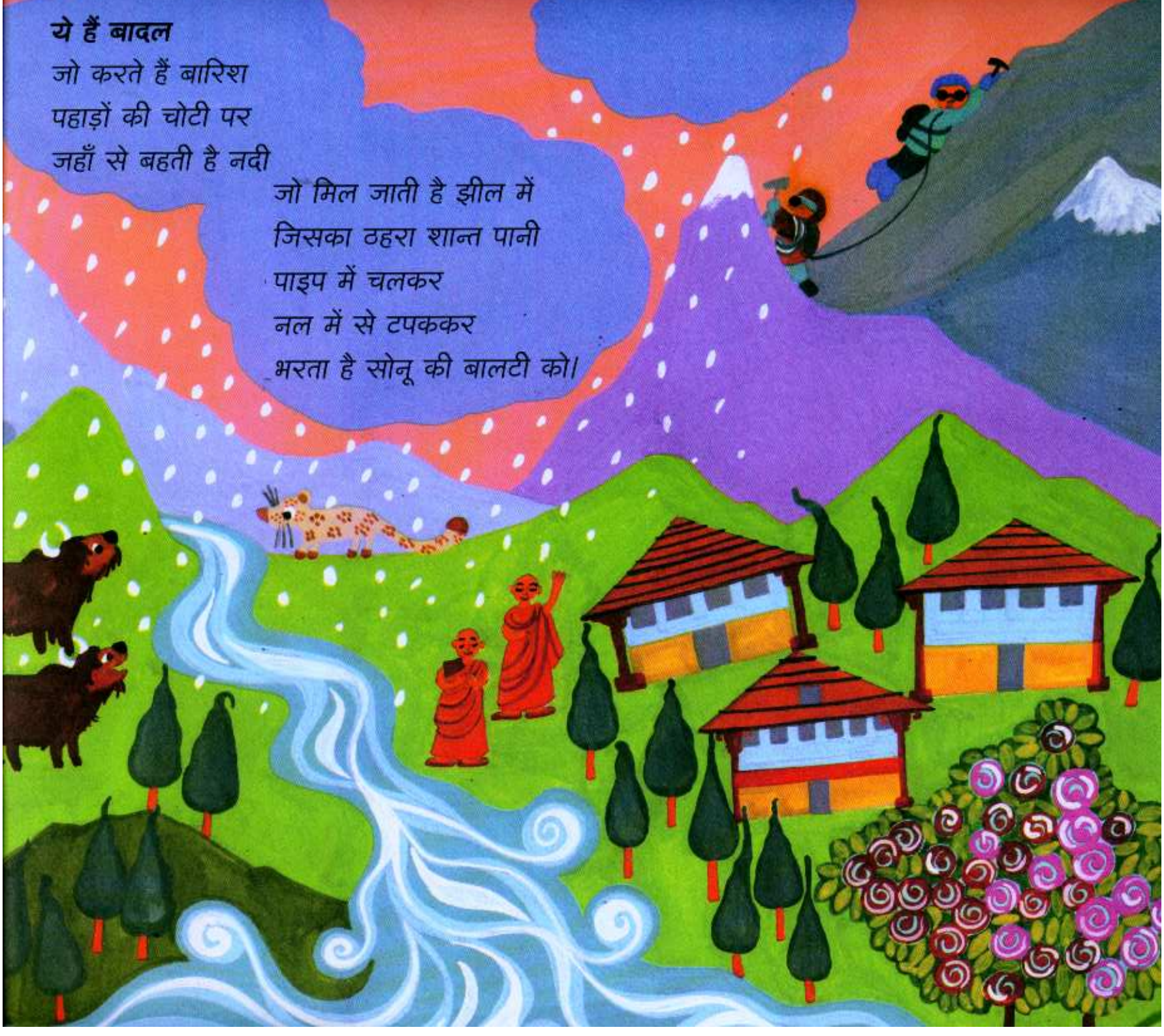
ये हैं बादल
जो करते हैं बारिश
पहाड़ों की चोटी पर
जहाँ से बहती है नदी
जो मिल जाती है झील में
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

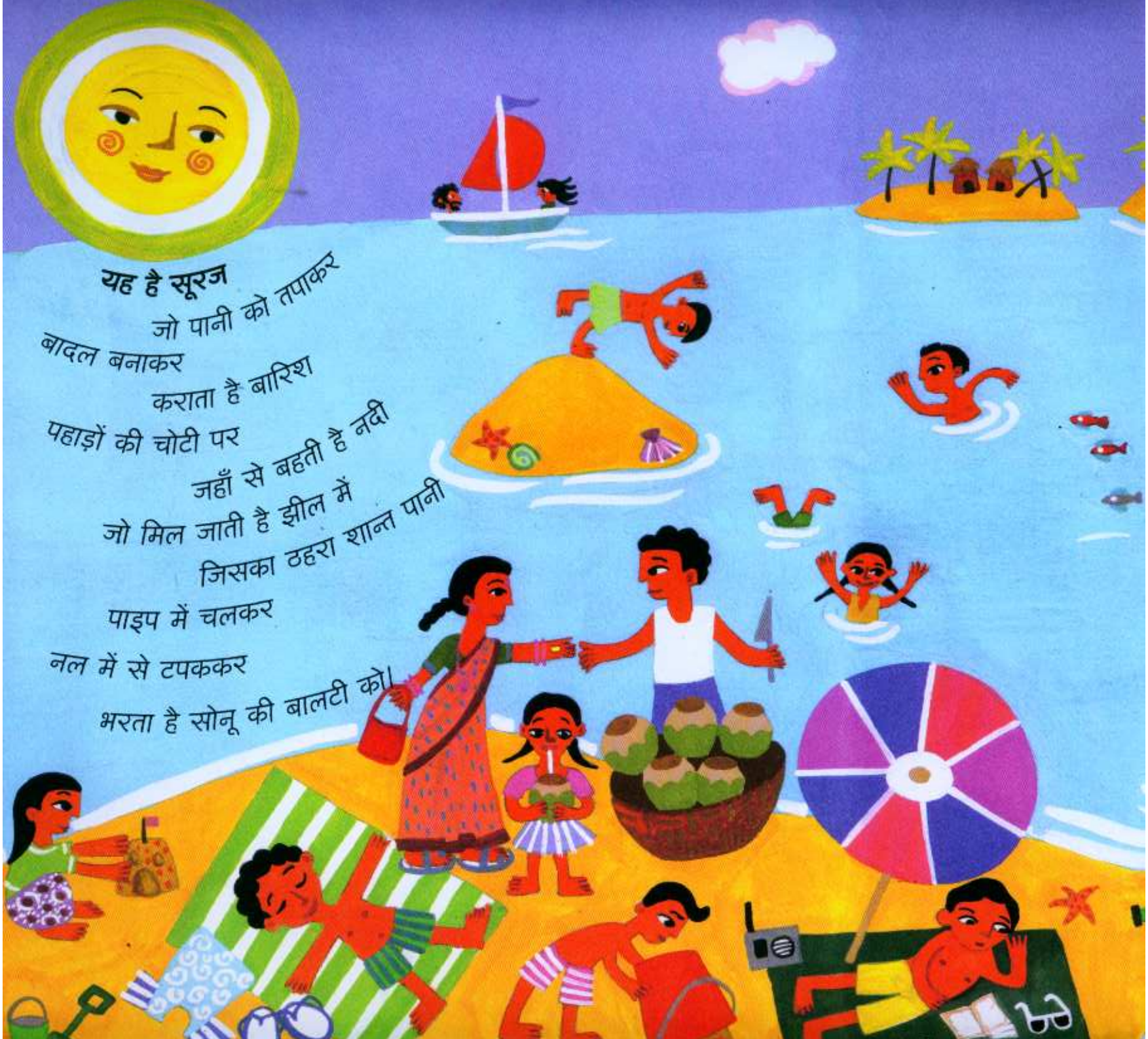
यह है सूरज
जो पानी को तपाकर
बादल बनाकर
कराता है बारिश
पहाड़ों की चोटी पर
जहाँ से बहती है नदी
जो मिल जाती है झील में
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

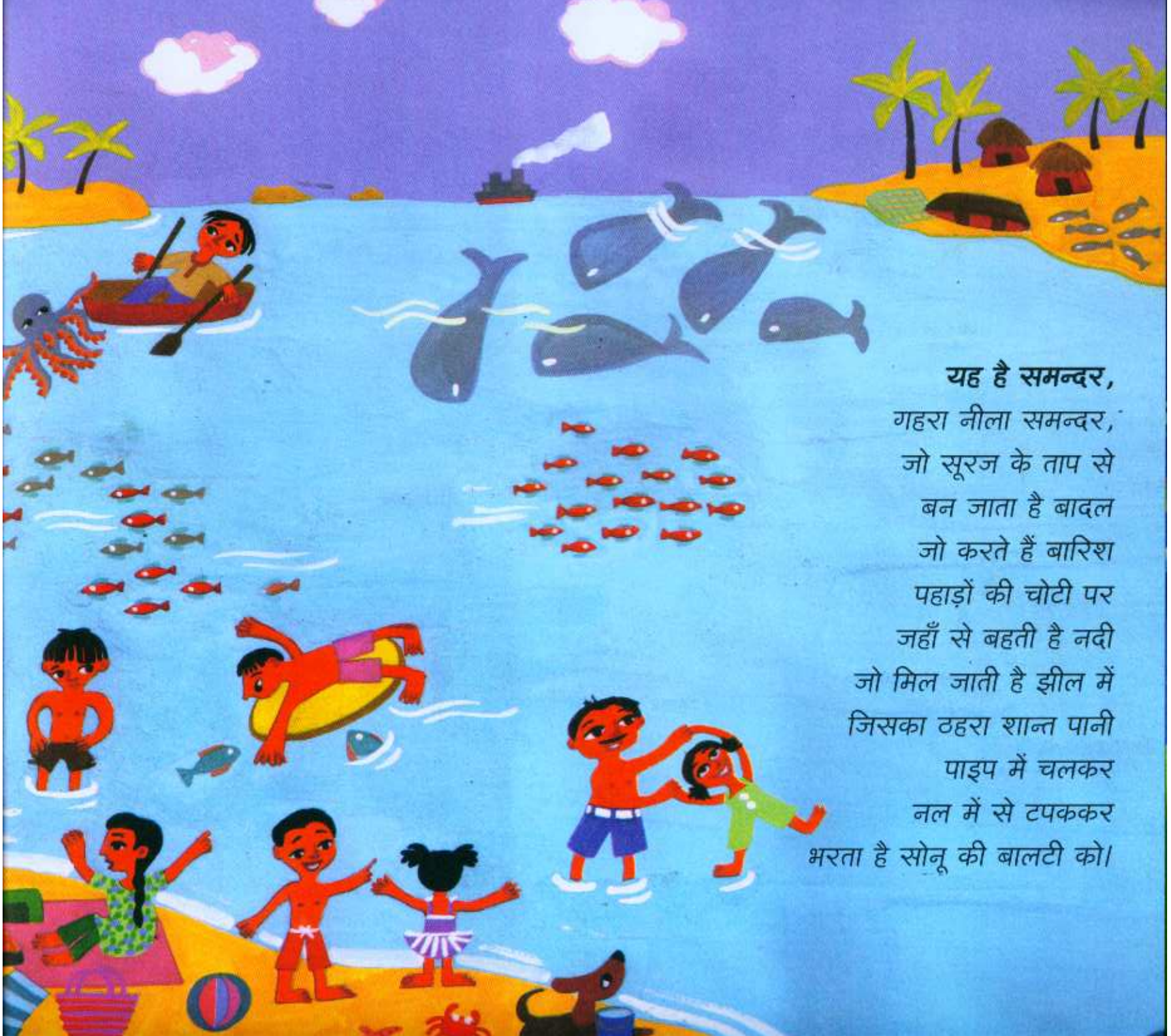

यह है समन्दर,
गहरा नीला समन्दर,
जो सूरज के ताप से
बन जाता है बादल
जो करते हैं बारिश
पहाड़ों की चोटी पर
जहाँ से बहती है नदी
जो मिल जाती है झील में
जिसका ठहरा शान्त पानी
पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है सोनू की बालटी को।

फिर क्या होता है?

सोनू के नहाने के बाद
पानी...
रिस जाता है ज़मीन में

जा मिलता है समन्दर से
और सूरज के ताप से
बन जाता है बादल
करता है बारिश
पहाड़ों की चोटी पर
बहता है नदी बनकर
ठहर जाता है झील में
फिर पाइप में चलकर
नल में से टपककर
भरता है बालटी... किसी और की।

सोनू तैयार था पानी भरने के लिए: मगर झील किनारे से, नदी के संग-संग, पहाड़ों पर चढ़ते और समन्दर में गोते लगाते वह चल पड़ा पानी के सफर पर।

लुभावने चित्रों और आखिर में छिपे एक तोहफे वाली यह किताब हमारे आसपास की चीज़ों के बीच के गहरे रिश्तों की ओर हमारा ध्यान दिलाती है। छोटे से छोटों और बूढ़ों से भी बड़ों के लिए पेश है पानी की यह कहानी।

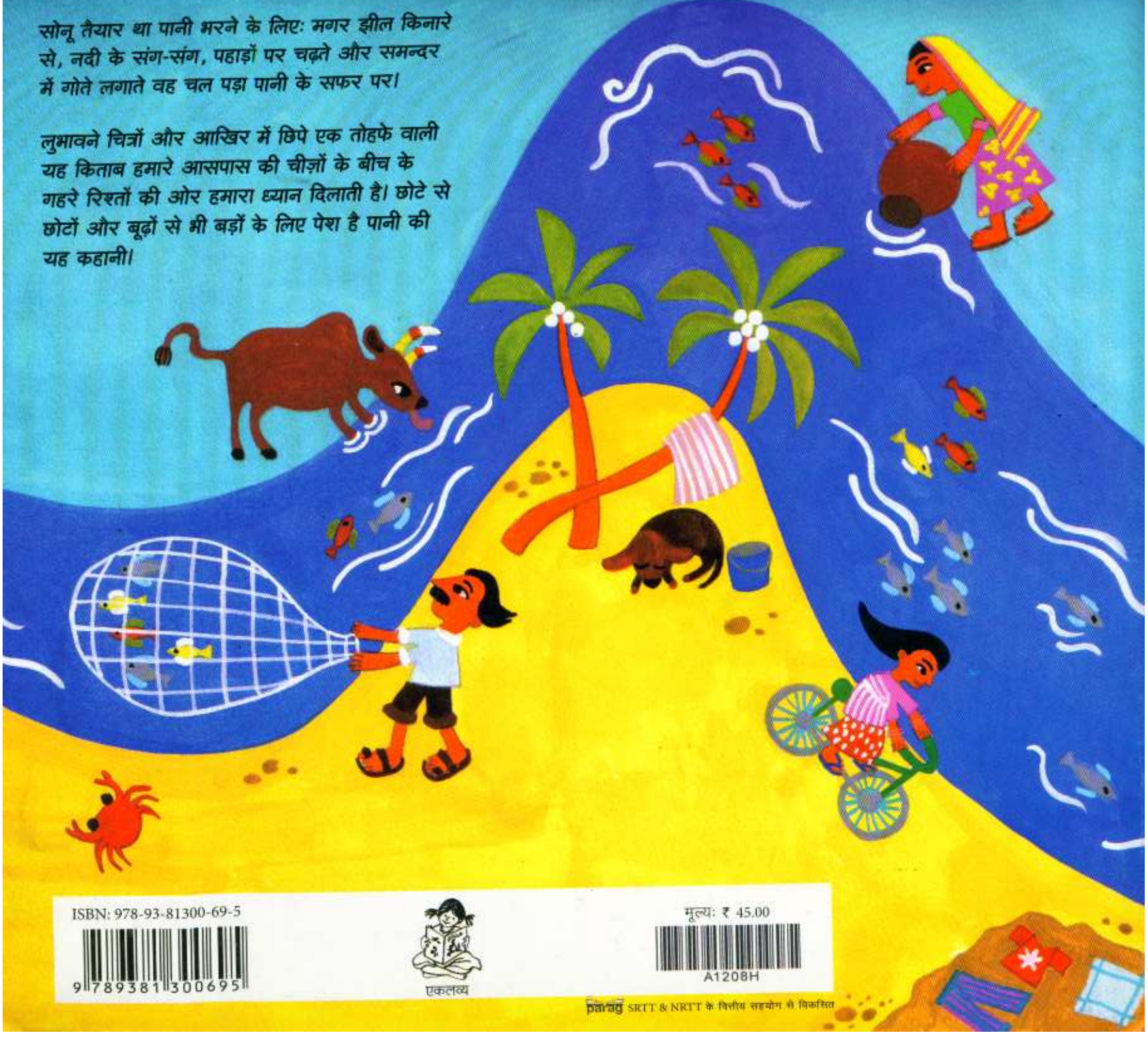

ISBN: 978-93-81300-69-5

9 789381 300695

एकलव्य

मूल्य: ₹ 45.00

A1208H

SRTT & NRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित